



## आईआईटी भुवनेश्वर और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास द्वारा 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' पर कार्यशाला का आयोजन

**भुवनेश्वर, 6 अक्टूबर 2024:** भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास (एसएसयूएन), ओडिशा के सहयोग से 5 और 6 अक्टूबर 2024 को 'भारतीय ज्ञान प्रणाली (बीकेएस)' विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। यह अरगुल परिसर है।

कार्यशाला के भाग के रूप में एसएसयूएन के सचिव डॉ. अतुल भाई कोठारी द्वारा 'भारतीय ज्ञान प्रणाली में अनुसंधान और नवाचार' विषय पर एक सार्वजनिक व्याख्यान दिया गया। डॉ. कोठारी की बातचीत, जो प्रकृति में संवादात्मक थी, इस सवाल पर केंद्रित थी कि हमें भारतीय ज्ञान प्रणाली (बीकेएस) का अध्ययन क्यों और किस तरह से करने की आवश्यकता है। डॉ. कोठारी ने बताया कि भारतीय ज्ञान प्रणालियों के अध्ययन से समकालीन दुनिया के बेहतर समाधान मिल सकते हैं, इसका सबसे अच्छा स्रोत भारतीय ज्ञान प्रणाली है। इसके अलावा, हमारे बौद्धिक पूर्वजों के बारे में पढ़ने से हमारे छात्रों को अपने संबंधित क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाले शोध को आगे बढ़ाने के लिए काफी प्रेरणा मिलेगी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बीकेएस ने स्वयं, सर्वोच्च और प्रकृति के बीच अंतर्संबंध खोजने का समग्र ज्ञान प्रदान किया। उन्होंने आग्रह किया कि शिक्षा प्रणाली को सभी स्तरों पर, संस्थान की प्रकृति, पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन स्तर पर स्वदेशी मोड़ लेना चाहिए।

स्वागत भाषण में, आईआईटी भुवनेश्वर के निदेशक प्रो. श्रीपाद कर्मलकर ने दर्शकों को याद दिलाया कि यद्यपि विज्ञान सार्वभौमिक है, वैज्ञानिक नहीं हो सकते हैं। इसलिए, भारतीय ज्ञान प्रणाली (बीकेएस) का अध्ययन करके हम दुनिया को देखने के वैकल्पिक तरीके ढूंढ सकते हैं जो कुछ पूर्वाग्रहों से मुक्त हों। हालाँकि, उन्होंने आग्रह किया कि ऐसे दृष्टिकोणों का उचित साक्ष्य के साथ समर्थन किया जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि बीकेएस कोई एक विषय नहीं है बल्कि इसमें कई विषयों को शामिल किया गया है। बीकेएस को समझने या प्रचारित करने के लिए विभिन्न विषयों का सामान्य ज्ञान पर्याप्त नहीं है। हमें उस अनुशासन में बीकेएस तत्व की उचित सराहना के लिए, चाहे वह गणित, धातुकर्म या वास्तुकला हो, एक अनुशासन की गहरी विशेषज्ञता की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि, भावनात्मक संतुष्टि के अलावा, बीकेएस अध्ययन के लिए अन्य प्रेरक कारकों में वर्तमान समस्याओं और बौद्धिक जिज्ञासा के व्यावहारिक समाधान की खोज शामिल होनी चाहिए।

इस अवसर पर बोलते हुए, झारखंड राय विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर सविता सेंगर ने जोर देकर कहा कि हमें बीकेएस की प्रासंगिकता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना चाहिए और जो हमारे समय के लिए उपयुक्त है उसे अपनाना चाहिए। बालासोर के माननीय सांसद श्री प्रताप चंद्र सारंगी भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति की निरंतरता, मस्तिष्क को शिक्षा के सर्वोत्तम

रूप के रूप में प्रशिक्षित करने और संस्कृत और अन्य मूल भाषाओं को सीखने के महत्व, उड़िया, हिंदी और अंग्रेजी के बीच चतुराई से स्विच करने के बारे में अपनी राय साझा की।

साथ ही कार्यशाला के दौरान 17/18 नवंबर को होने वाले ज्ञान कुंभ के पोस्टर का विमोचन भी अतिथियों द्वारा किया गया।

सत्र में आईआईटी और अन्य संस्थानों के संकाय, कर्मचारियों और छात्रों सहित 100 से अधिक सदस्यों ने भाग लिया।

-----